

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 11 अध्याय 29: भक्ति-योग

5 October 2026



उद्धव को दिए अपने दीर्घ उपदेश के अन्त में, भगवान् श्रीकृष्ण सबसे सरल मार्ग प्रकट करते हैं — प्रत्येक प्राणी में स्वयं की उपस्थिति देखना और बिना अहंकार उस उपस्थिति के समक्ष नतमस्तक होना — और फिर अपने प्रिय सखा को बदरिकाश्रम के वन-आश्रम भेजते हैं, ताकि वह उस दर्शन को जीवनभर की शान्त भक्ति में जी सके।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है, जो श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं तथा शिक्षाओं के माध्यम से एक भक्तिपूर्ण यात्रा है। उद्धव निष्कपट भाव से स्वीकार करते हैं कि योग के द्वारा मन को वश में करना उनके लिए असम्भव-सा प्रतीत होता है। उद्धव-गीता के इस अन्तिम प्रवचन में, भगवान् सबसे सरल उपदेश से उत्तर देते हैं — एक ऐसी भक्ति जिसे कोई भी साध सकता है, केवल उन्हें सदा स्मरण करके, प्रत्येक प्राणी में उन्हें देखकर, और उनकी रची हर सत्ता के समक्ष नतमस्तक होकर। अध्याय कोमलता से समाप्त होता है, जब उद्धव आशीर्वाद पाकर बदरिकाश्रम की ओर प्रस्थान करते हैं।

अध्याय की जानकारी

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण

- स्कन्ध: 11 (एकादश स्कन्ध)
- अध्याय: 29 (उनतीसवाँ प्रवचन)
- अध्याय शीर्षक: भक्ति-योग
- मुख्य वक्ता: भगवान् श्रीकृष्ण, उद्धव को उपदेश देते हुए; उद्धव भी प्रश्न तथा कृतज्ञ स्तुति में बोलते हैं; समस्त कथा सुकदेव गोस्वामी द्वारा राजा परीक्षित को कही गई
- मुख्य श्रोता: उद्धव; तथा बाह्य ढाँचे में राजा परीक्षित
- मुख्य स्थान: द्वारका, भगवान् के उद्धव को दिए गए उपदेश की समाप्ति पर, उद्धव के बदरिकाश्रम प्रस्थान से पूर्व
- केन्द्रीय विषय: भक्ति का सरल मार्ग — प्रत्येक प्राणी में भगवान् को देखना तथा समस्त सृष्टि के समक्ष नतमस्तक होना — और उद्धव की बदरिकाश्रम की विदाई-यात्रा
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 11, अध्याय 29, श्लोक 1-49
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

अट्ठाईसवें अध्याय में भगवान् ने उद्धव को सांख्य का उपदेश दिया था — शरीर तथा प्रकृति के गुणों से आत्मा को पृथक् पहचानना — और योग की बाधाओं का वर्णन किया, यह आश्वासन देते हुए कि जो केवल उन्हीं पर निर्भर रहता है, वह कभी भी इन बाधाओं से विचलित नहीं होता। अब उद्धव अपने भगवान् से एक अन्तिम प्रश्न पूछते हैं।

उद्धव सरल मार्ग पूछते हैं

उद्धव ने निवेदन किया कि यह योग-साधना, यद्यपि सत्य है, किन्तु उस व्यक्ति के लिए अत्यन्त दुष्कर प्रतीत होती है जिसने अभी तक अपने मन को नहीं जीता। उन्होंने स्पष्ट रूप से भगवान् से वह मार्ग बताने की प्रार्थना की जिससे मनुष्य सहजता से सिद्धि प्राप्त कर सके।

श्रीउद्धव उवाच

सुदुस्तरामिमां मन्ये योगचर्यामनात्मनः ।

यथाञ्जसा पुमान् सिद्ध्येत् तन्मे ब्रूह्यञ्जसाच्युत ॥ १ ॥

*śrī-uddhava uvāca su-dustarām imām manye yoga-caryām anātmanaḥ yathāñjasā pumān
siddhyet tan me brūhy añjasācyuta*

अर्थ: उद्धव ने निवेदन किया: मैं इस योग-साधना को, जिसने अपने मन को नहीं जीता उसके लिए अत्यन्त दुष्कर मानता हूँ। हे अच्युत! कृपया मुझे स्पष्ट रूप से वह मार्ग बताइए जिससे मनुष्य सहजता से सिद्धि प्राप्त कर सके। (स्कन्ध 11, अध्याय 29, श्लोक 1)

सच्चे साधक भी, उन्होंने कहा, मन को बलपूर्वक वश में करने के प्रयास में थक जाते हैं; इसीलिए विवेकी जन भगवान् के चरण-कमलों की सरल शरण लेते हैं। उद्धव भगवान् की कोमलता पर चकित हुए — कि वे, जिनके समक्ष स्वयं ब्रह्मा झुकते हैं, अपने शरणागत भक्तों में इस प्रकार आनन्दित होते हैं, जैसे श्रीराम-रूप में तथा वृन्दावन के बाल्यकाल में सामान्य प्राणियों के साथ आनन्द लिया था — बाह्य गुरु तथा अन्तर्यामी दोनों रूपों में प्रकट होकर।

श्रीकृष्ण मुस्कराते हुए उपदेश आरम्भ करते हैं

पूर्ण समर्पित हृदय से पूछे गए उद्धव के प्रश्न को सुनकर, श्रीकृष्ण — जो स्वयं ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के भी स्वामी हैं — अत्यन्त कोमल मुस्कान के साथ उद्धव की ओर मुड़े, और प्रेमपूर्ण वचनों में उपदेश देने लगे।



अत्यन्त कोमल मुस्कान के साथ, श्रीकृष्ण उद्धव की ओर मुड़कर अपना सबसे सरल उपदेश आरम्भ करते हैं — प्रत्येक प्राणी में स्वयं को देखने का मार्ग (श्लोक 7)।

सरलतम आचरण-मार्ग

भगवान् ने कहा कि वे अब वह सबसे मंगलकारी आचरण बताएँगे जो उन्हें प्रिय है — ऐसा आचरण जिसका श्रद्धापूर्वक पालन करने से मनुष्य मृत्यु पर भी विजय पा लेता है।

कुर्यात् सर्वाणि कर्माणि मदर्थं शनकैः स्मरन् ।

मय्यर्पितमनश्चित्तो मद्धर्मात्मनोरतिः ॥ ९ ॥

kuryāt sarvāṇi karmāṇi mad-arthaṁ śanakaiḥ smaran mayy arpita-manaś-citto mad-dharmātma-mano-ratiḥ

अर्थ: मन तथा हृदय मुझे अर्पित करके, मनुष्य को धीरे-धीरे, सदैव मेरा स्मरण करते हुए, प्रत्येक कर्म मेरे लिए करना सीखना चाहिए। (स्कन्ध 11, अध्याय 29, श्लोक 9)

उसे अपने भक्तों की संगति करनी चाहिए, भगवान् ने आगे कहा, तथा पावन दिनों पर उत्सव तथा गीत से उनका सम्मान करना चाहिए; और शुद्ध हृदय से, आकाश के समान अस्पृष्ट, प्रत्येक प्राणी में व्याप्त परम आत्मा को देखना सीखना चाहिए।

समस्त सृष्टि में एक आत्मा का दर्शन

यहाँ भगवान् ने अपने उपदेश का हृदय खोला। जो प्रत्येक प्राणी को स्वयं से अभिन्न मानता है, विद्वान तथा निम्न, चोर तथा भक्त को एक ही प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखता है, वही सच्चा ज्ञानी है।

इति सर्वाणि भूतानि मद्भावेन महाद्युते ।
सभाजयन् मन्यमानो ज्ञानं केवलमाश्रितः ।
ब्राह्मणे पुक्कसे स्तेने ब्रह्मण्येऽर्के स्फुलिङ्गके ।
अक्रूरे क्रूरके चैव समदृक् पण्डितो मतः ॥ १३-१४ ॥

*iti sarvāṇi bhūtāni mad-bhāvena mahā-dyute sabhājayan manyamāno jñānaṁ kevalam āśritaḥ
brāhmaṇe pukase stene brahmaṇye 'rke sphuliṅgake akrūre krūrake caiva sama-dṛk paṇḍito
mataḥ*

अर्थ: हे तेजस्वी! समस्त प्राणियों को मुझ रूप में सम्मानित करते हुए और इसी ज्ञान में पूर्णतः स्थित होकर — विद्वान् ब्राह्मण तथा सबसे निम्न जन, चोर तथा भक्त, सूर्य तथा स्फुलिंग, कोमल तथा क्रूर को समान दृष्टि से देखने वाला ही सच्चा ज्ञानी माना जाता है। (स्कन्ध 11, अध्याय 29, श्लोक 13-14)

इस दृष्टि में स्थित मन से स्पर्धा, दोष-दर्शन तथा तिरस्कार शीघ्र ही दूर हो जाते हैं। तत्पश्चात् भगवान् का सबसे गहन निर्देश आया: शरीर के अहंकार को पूर्णतः त्यागकर, भक्त को प्रत्येक प्राणी के समक्ष भूमि पर झुककर प्रणाम करना चाहिए, सबसे निम्न तथा सबसे सम्मानित को समान श्रद्धा अर्पित करते हुए।

विसृज्य स्मयमानान् स्वान् दृशं व्रीडां च दैहिकीम् ।
प्रणमेद् दण्डवद् भूमावाश्चचाण्डालगोखरम् ॥ १६ ॥

*visṛjya smayamānān svān dṛśaṁ vrīḍāṁ ca daihikīm praṇamed daṇḍa-vad bhūmāv ā-śva-
cāṇḍāla-go-kharam*

अर्थ: अपने ही जन की हँसी तथा शरीर से उत्पन्न समस्त लज्जा त्यागकर, उसे भूमि पर दण्डवत् होकर कुत्ते, अन्त्यज, गौ तथा गधे से लेकर समाज के सबसे सम्मानित व्यक्ति तक, प्रत्येक प्राणी को प्रणाम करना चाहिए। (स्कन्ध 11, अध्याय 29, श्लोक 16)



भगवान् अपने भक्त से समस्त अहंकार त्यागकर प्रत्येक प्राणी के समक्ष झुकने को कहते हैं, प्रत्येक में अपनी ही उपस्थिति समान रूप से देखते हुए (श्लोक 16)।

जब तक यह दृढ़ विश्वास हृदय में जड़ नहीं पकड़ लेता, भगवान् ने कहा, तब तक मनुष्य को वाणी, मन तथा शरीर से इसी प्रकार उनकी उपासना करते रहना चाहिए; और जब सब कुछ ब्रह्म-रूप में ही देखा जाने लगे, तो साधक, संशय-मुक्त होकर, अन्ततः ऐसे बाह्य प्रयास से विश्राम पा सकता है।

अयं हि सर्वकल्पानां सध्रीचीनो मतो मम ।

मद्भावः सर्वभूतेषु मनोवाक्कायवृत्तिभिः ॥ १९ ॥

ayaṁ hi sarva-kalpānām sadhrīcīno mato mama mad-bhāvaḥ sarva-bhūteṣu mano-vāk-kāya-vṛttibhiḥ

अर्थ: जितनी भी साधनाएँ हैं, उनमें मैं इसी को सबसे सत्य तथा सर्वश्रेष्ठ मानता हूँ — मन, वाणी तथा शरीर के माध्यम से प्रत्येक प्राणी में मेरी उपस्थिति को देखना। (स्कन्ध 11, अध्याय 29, श्लोक 19)

इस मार्ग को अपनाने में तनिक भी हानि नहीं है, भगवान् ने उद्धव को आश्वासित किया, क्योंकि यह समस्त लालसा से मुक्त है; निष्काम भाव से अर्पित निष्फल कर्म भी धर्म के स्तर तक उठ जाता है। यहीं, उन्होंने कहा, सच्चा ज्ञान निहित है — कि इसी नाशवान शरीर के द्वारा, मनुष्य इसी जीवन में, उस अपरिवर्तनशील सत्य को प्राप्त कर सकता है।

वेदान्त का सार, और इसे बाँटने का वरदान

यह उपदेश, भगवान् ने कहा, वेदान्त का सम्पूर्ण सार समेटे हुए है, जो देवताओं के लिए भी ग्रहण करना दुष्कर है; जो भी इसे सँजोता है वह वेदों में छिपे शाश्वत ब्रह्म को जान लेगा। जो गुरु इसे उदारतापूर्वक बाँटता है, उसे भगवान् ने अपना स्वयं स्वरूप प्रदान करने का वचन दिया; तथा श्रद्धापूर्वक सुनने वाला इसी के द्वारा सर्वोच्च भक्ति का अभ्यास करता है।

तब भगवान् ने स्नेहपूर्वक पूछा कि क्या उद्धव का शोक दूर हो गया है, और चेतावनी दी कि यह उपदेश पाखण्डी या अश्रद्धालु को न दिया जाए, अपितु केवल शुद्ध हृदय वालों को — यहाँ तक कि शूद्रों तथा स्त्रियों को भी, जहाँ सच्ची भक्ति हो। जिसने यह ज्ञान पी लिया, उसके लिए अब कुछ भी जानना शेष नहीं रहता, जैसे अमृत पीने के पश्चात् कुछ शेष नहीं रहता।



जो भी इस उपदेश को सँजोता है वह वेदों में छिपे शाश्वत सत्य को जान लेता है, जैसे हृदय में भक्ति का कमल शान्ति से खिल उठता है (श्लोक 24-28)।

श्रीकृष्ण का स्वयं से एकत्व का वरदान

उद्धव जैसे भक्तों को, भगवान् ने कहा, वे एक साथ ही जीवन के सम्पूर्ण चतुर्विध लक्ष्य दे देते हैं, जिन्हें अन्य लोग टुकड़ों में पाते हैं। जब मनुष्य अपने समस्त कर्मों पर दावा त्यागकर स्वयं को अर्पित कर देता है, तो वह आत्मा दुर्लभतम कृपा के लिए चुनी जाती है, अमरत्व तथा भगवान् के साथ एकत्व को प्राप्त करते हुए।

उद्धव का हृदय उमड़ पड़ता है

यह उपदेश सुनकर, उद्धव हाथ जोड़े खड़े रह गए, उनकी आँखों में अश्रु भर आए, और एक लम्बे क्षण तक वे प्रेम से अभिभूत होकर कुछ कह न सके। अपने हृदय को प्रयासपूर्वक स्थिर करके, तथा स्वयं को धन्य मानते हुए, उन्होंने अपना सिर भगवान् के चरणों पर रखा और अपनी वाणी पाई।

अज्ञान का अन्धकार जो उन्होंने ढोया था, उद्धव ने कहा, भगवान् के उपदेश से उसी प्रकार दूर हो गया जैसे अग्नि के समक्ष शीत दूर हो जाती है; ज्ञान का दीपक भगवान् की कृपा मात्र से पुनः प्राप्त हुआ। कुटुम्बियों के प्रति स्नेह का बन्धन आत्म-साक्षात्कार की तलवार से कट गया था। गहन नम्रता से उन्होंने केवल यही प्रार्थना की कि चरण-कमलों के प्रति अविचल प्रेम सदा हृदय में बना रहे।

श्रीकृष्ण उद्धव को पावन वन भेजते हैं

उत्तर में, भगवान् ने उद्धव को अपनी आज्ञा से बदरिकाश्रम नामक अपने आश्रम जाने तथा वहाँ इसी उपदेश को शरीर तथा आत्मा से जीने का निर्देश दिया।

गच्छोद्धव मयादिष्टो बदर्याख्यं ममाश्रमम् ।

तत्र मत्पादतीर्थोद्दि स्नानोपस्पर्शनैः शुचिः ॥ ४१ ॥

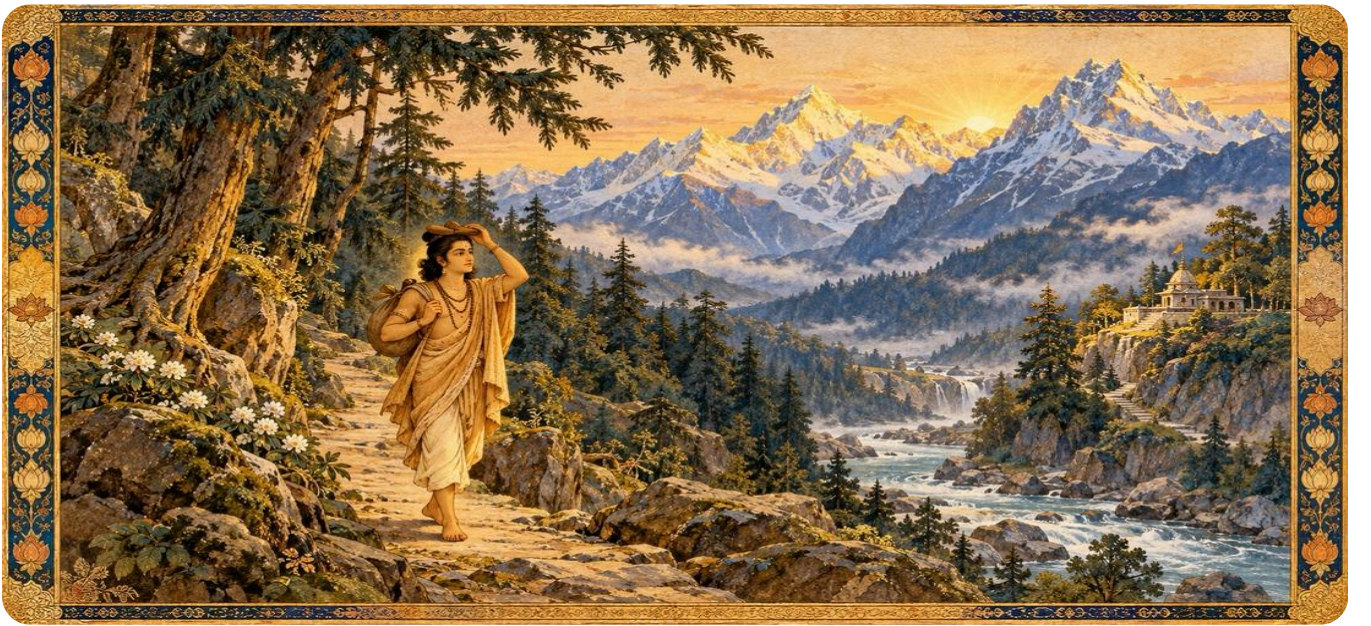
*gacchoddhava mayādiṣṭo badary-ākhyam mamāśramam tatra mat-pāda-tīrthode
snānopasparśanaiḥ śuciḥ*

अर्थ: हे उद्धव! मेरी आज्ञा से बदरी नामक मेरे आश्रम जाओ; वहाँ मेरे चरणों से पवित्र जल में स्नान करके शुद्ध हो जाओ। (स्कन्ध 11, अध्याय 29, श्लोक 41)

इस निर्देश के अनुसार, उद्धव को वल्कल वस्त्र पहनकर, वन्य फलों पर जीवित रहकर, शीत-उष्ण में धैर्यवान्, सौम्य, संयतेन्द्रिय तथा शान्त रहना था, अपना मन तथा वाणी भगवान् में लीन रखते हुए — और इस प्रकार, आत्मा की तीनों गतियों से परे जाकर, वे अन्ततः स्वयं भगवान् को प्राप्त होंगे।

उद्धव की विदाई और हिमालय की राह

इस प्रकार निर्देशित होकर, उद्धव भगवान् की श्रद्धापूर्वक परिक्रमा कर, उनके चरणों पर सिर रखकर, अश्रुओं से उन्हें नहला बैठे, यद्यपि उपदेश उन्हें हर्ष-शोक से परे ले जा चुका था। विदाई का भार सहज सहन न कर पाकर, वे बार-बार झुकते हुए रुके, और अन्ततः — अपने सिर पर, एक प्रिय उपहार के रूप में, उन पावन चरणों को स्पर्श कर चुकी काष्ठ-पादुकाएँ धारण कर — विदा हुए।



भगवान् को अपने हृदय में प्रतिष्ठित करके, उद्धव विशाला अर्थात् बदरिकाश्रम की ओर आगे बढ़ते हैं, अपने भगवान् के उपदेश को जीने के लिए (श्लोक 47)।

भगवान् को अपने हृदय के अन्तरतम में प्रतिष्ठित करके, वह महान् भक्त आगे बढ़ते गए, यहाँ तक कि विशाला अर्थात् बदरिकाश्रम पहुँच गए; और वहाँ, अपने भगवान् द्वारा सिखाई गई तपस्या का यथावत् पालन करते हुए, समय आने पर श्रीहरि के साथ एकत्व की उसी अवस्था को प्राप्त हुए।

इस उपदेश का कोष

इस ज्ञान-अमृत का तनिक भी स्वाद लेने वाला — जो श्रीकृष्ण ने अपने प्रिय भक्त को दिया — न केवल स्वयं मुक्त हो जाता है, अपितु अपनी संगति से सम्पूर्ण जगत् के लिए भी मुक्ति का साधन बन जाता है। सुकदेव गोस्वामी ने यह कथा राजा परीक्षित को सुनाकर, भगवान् को प्रणाम करते हुए इसे समाप्त किया।

भवभयमपहन्तुं ज्ञानविज्ञानसारं
निगमकृदुपजहे भृङ्गवद् वेदसारम् ।
अमृतमुदधितश्चापाययद् भृत्यवर्गान्
पुरुषमृषभमाद्यं कृष्णसंज्ञं नतोऽस्मि ॥ ४९ ॥

*bhava-bhayam apahantum jñāna-vijñāna-sāraṁ nigama-kṛd upajahre bhṛṅga-vad veda-sāraṁ
amṛtam udadhitaś cāpāyayad bhṛtya-vargān puruṣam ṛṣabham ādyaṁ kṛṣṇa-saṁjñāṁ nato 'smi*

अर्थ: संसार-भय को मिटाने के लिए, वेदों के रचयिता ने, भ्रमर के समान, वेदों का सार ज्ञान तथा विज्ञान के रूप में निकाला, और अपने भक्तों को समुद्र-मन्थन से निकला अमृत भी पिलाया; उस आदि तथा सर्वश्रेष्ठ पुरुष, श्रीकृष्ण नाम से विख्यात, को मैं प्रणाम करता हूँ। (स्कन्ध 11, अध्याय 29, श्लोक 49)



यह सम्पूर्ण उपदेश राजा परीक्षित को सुनाकर, सुकदेव गोस्वामी अपने हृदय से श्रीकृष्ण को प्रणाम करते हुए इसे समाप्त करते हैं (श्लोक 49)।

इस अध्याय को प्रमुख शिक्षाएँ

1. हर साधक के लिए एक सरल मार्ग है। जहाँ केवल योग से मन को वश में करना दुष्कर प्रतीत हो, वहाँ भगवान् एक सहज मार्ग देते हैं — प्रत्येक कर्म में उन्हें स्मरण करना, धीरे-धीरे उन्हीं को कर्तव्य अर्पित करना (श्लोक 1, 9)।
2. भक्ति सबसे सरल तथा सबसे सम्पूर्ण साधना है। इतना सब सिखाने के पश्चात्, भगवान् का अन्तिम वचन यही है: प्रत्येक प्राणी में मन, वाणी तथा शरीर से उनकी उपस्थिति देखना ही वह मार्ग है जिसे वे स्वयं सत्य तथा श्रेष्ठ कहते हैं। इसमें जन्म या विद्या की कोई दुर्लभ योग्यता नहीं माँगी जाती — इसे वे भी साध सकते हैं जिन्हें संसार निम्न मानता है, तथा स्त्रियाँ भी, जहाँ सच्ची भक्ति हो। भक्ति अपने भीतर वही फल समेटे है जिसे ज्ञान तथा योग कठिन मार्गों से खोजते हैं, प्रत्येक हृदय के लिए समान रूप से खुला (श्लोक 13–14, 19, 31)।
3. समदृष्टि अहंकार को विलीन कर देती है। विद्वान तथा अन्त्यज, भक्त तथा चोर, सूर्य तथा स्फुलिंग को एक ही प्रेमपूर्ण दृष्टि से सम्मानित करना, स्पर्धा, दोष-दर्शन तथा तिरस्कार को शान्तिपूर्वक दूर कर देता है (श्लोक 13–15)।
4. समस्त सृष्टि के समक्ष निर्लज्ज होकर नतमस्तक हों। भगवान् अपने भक्त से सामाजिक अहंकार को पूर्णतः त्यागकर, चाहे कितना भी निम्न प्राणी हो, उसके समक्ष झुकने को कहते हैं, प्रत्येक में अपनी ही उपस्थिति पहचानते हुए (श्लोक 16)।
5. समस्त कर्मों का समर्पण दुर्लभतम कृपा लाता है। जो आत्मा अपने कर्मों पर समस्त दावा त्यागकर स्वयं को पूर्णतः भगवान् को अर्पित कर देती है, वह उनके साथ एकत्व के लिए चुनी जाती है, मृत्यु से अमरत्व की ओर पार होते हुए (श्लोक 33–34)।
6. स्मरण से भरा जीवन स्वयं अपनी पूर्णता है। बदरिकाश्रम भेजे जाने पर, उद्धव दिखाते हैं कि यह उपदेश पूर्णतः जीया जाए तो कैसा दिखता है — सरलता, धैर्य, तथा मन-वाणी भगवान् में लीन, शान्तिपूर्वक जीवन के अन्त तक निभाई गई (श्लोक 41–47)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस अध्याय से जो हृदय में बना रहता है वह इसकी कोमलता है। उद्धव स्वीकार करते हैं कि उनका अपना अशान्त मन बलपूर्वक स्थिर नहीं किया जा सकता — और भगवान् उनसे और अधिक प्रयास करने को नहीं कहते। इसके बजाय वे कुछ ऐसा देते हैं जो कोई भी कर सकता है: मुझे स्मरण करो, जिससे भी मिलो उसमें मुझे देखो, और सबसे निम्न प्राणी के समक्ष भी अपना अहंकार झुकाओ। इसमें किसी विद्वान के मस्तिष्क या योगी के अनुशासन की आवश्यकता नहीं, केवल एक सहृदय इच्छा चाहिए। भगवान् के अपने चित्र में, सच्चा ज्ञान गूढ़ सिद्धान्त में निपुणता नहीं, अपितु चोर तथा सन्त को एक ही प्रेम से देख पाने की क्षमता है। और जब उद्धव को विदा लेनी पड़ती है, उनका वियोग-शोक छिपा नहीं रहता; वे मुक्त आत्मा होते हुए भी खुलकर रोते हैं, क्योंकि यहाँ प्रेम ही साक्षात्कार का मुकुट है, न कि कुछ जो साक्षात्कार के पश्चात् पीछे छूट जाता है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, भगवान् द्वारा उद्धव को सिखाई गई समदृष्टि के प्रणाम का अभ्यास कीजिए। एक क्षण चुनिए जिसमें आप किसी से भी श्रेष्ठ होने के भाव को त्याग दें, और संसार द्वारा प्रायः अनदेखे किसी में — किसी अपरिचित में, किसी श्रमिक में, यहाँ तक कि अपने मार्ग में आए किसी पशु में भी — भगवान् की उपस्थिति को सम्मानित कीजिए। इस नम्रता को मौन रूप से अपने हृदय में विराजमान भगवान् को अर्पित कीजिए। अन्त में

उनके पावन नाम का धीरे से जप करते हुए इसे पूर्ण कीजिए: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” इस सरल क्रिया में आप उसी मार्ग पर चलते हैं जिसे भगवान् ने सबसे सरल तथा सर्वश्रेष्ठ कहा है।

उपसंहार

एकादश स्कन्ध का उनतीसवाँ प्रवचन उद्धव-गीता को उसके ज्योतिर्मय समापन तक ले जाता है। उद्धव का अशान्त मन योग के बल पर स्थिर नहीं हो पाता, यह जानकर भगवान् किसी कठोर साधना से नहीं, अपितु सबसे सरल मार्ग से उत्तर देते हैं — प्रत्येक कर्म में उन्हें स्मरण करना, प्रत्येक प्राणी में उन्हें जीवन्त देखना, और बिना अहंकार झुकना। यह दर्शन, वे कहते हैं, जन्म या विद्या चाहे जैसी भी हो, प्रत्येक निष्ठावान् हृदय के लिए खुला है। कृतज्ञता से अभिभूत, उद्धव बोल भी नहीं पाते, और केवल यही माँगते हैं कि प्रेम कभी न चुके। तब भगवान् उन्हें बदरिकाश्रम भेजते हैं, और उद्धव अश्रुपूर्ण नेत्रों से, अपने सिर पर भगवान् की पादुकाएँ धारण किए, विदा होते हैं, यहाँ तक कि श्रीहरि के साथ उसी एकत्व को प्राप्त हो जाते हैं। यहीं इस अध्याय का केन्द्रीय वरदान निहित है — भगवान् तक पहुँचने का मार्ग कुछ गिने-चुनों के लिए नहीं, अपितु नम्र प्रेम के द्वारा हर हृदय के लिए खुला है।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य वाणी हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), एकादश स्कन्ध, उनतीसवाँ प्रवचन, पृष्ठ 654–659।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशांसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बन्ध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-11-adhyay-29-bhakti-yoga-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़डम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट